MARKING SCHEME
ECONOMICS (576)

Class 12th **SAMPLE PAPER** **SET: B** **M.M:80**

Q.NO.	EXPECTED ANSWER/VALUE POINTS		MARKS
1	d) मांग का सिद्धांत	d) Theory of demand	1
2	a) $MRS_{XY} = \frac{P_X}{P_Y}$	a) $MRS_{XY} = \frac{P_X}{P_Y}$	1
3	d) उत्पादन	d) production	1
4	c) घटती दर से बढता है।	c) Increasing at a decreasing rate	1
5	a) रेक्टैंगुलर हाइपरबोला द्वारा	a) By rectangular Hyperbola	1
6	u – आकार का	U- shaped	1
7	धनात्मक	Positive	1
8	बाजार	Market	1
9	a) अभिकथन(A) और कारण (R) दोनो सही है और कारण (R) अभिकथन (A) की सही व्याख्या है।	a) Both Assertion (A) and Reason (R) are correct and Reason (R) is the correct explanation of Assertion (A)	1
10	c) अभिकथन(A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।	Assertion (A) is true but Reason (R) is false.	1

11 (Marks: 1.5, 1.5 / Or: 3)

अन्य बाते समान रहने पर जब किसी वस्तु की अपनी कीमत में कमी होने के फलस्वरूप् उसकी मांग अधिक हो जाती है तो इसे मांग का विस्तार कहा जाता है।

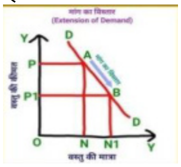

अथवा

किसी वस्तु की पूर्ति से अभिप्राय वस्तु की उन मात्राओं से है जिन्हे एक विक्रेता विभिन्न सम्भव कीमतों पर निश्चित समय में बेचने के लिए तैयार होता है।
यह दो प्रकार की होती है।
1. व्यक्तिगत पूर्ति
2. बाजार पूर्ति

Other things being equal, when a commodity's price decrea
As a result, if its demand becomes more then it is called expansion of demand.

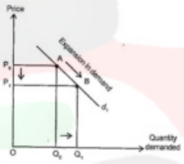

Or

Supply of a commodity means those quantities of the commodity which a seller is ready to sell in a given time at various possible prices. It is of two types.
1. Individual Supply
2. Market supply

12 (Marks: 1+ 1+ 1)

मांग के दृष्टिकोण के अधार पर वस्तुओं को सामान्य वस्तु एवं घटिया वस्तु के रूप में वर्गीकृत किया गया है। जिनकी परिभाषा इस प्रकार है।
1. सामान्य वस्तुएं :- सामान्य वस्तुएं वे वस्तुएं है जिनका आय प्रभाव धनात्मक होता है। सामान्य वस्तुओं के संबंध में उपभोक्ता की आय और सामान्य वस्तुओं की मांग में प्रत्यक्ष होता है।
2. घटिया वस्तुएं:- घटिया वस्तुएं वे वस्तुएं है जिनकी मांग आय पर घटती है और आय घटने पर बढती है अर्थात जिनका आय प्रभाव ऋणात्मक होता है।

On the basis of demand perspective, goods are classified as normal goods and inferior goods. Whose definition is as follows.
1. Ordinary goods:- Ordinary goods are those goods which have positive income effect. In relation to normal goods, there is a direct relationship between consumer's income and demand for normal goods.
2. Inferior goods:- Inferior goods are those goods whose demand decreases when income increases and increases when income decreases, that is, whose income effect is negative.

13 (Marks: 3)

mRiknu (bdkb;ka	dqy ykxr	dqy ifuorZu"khy ykxr	lhekar ykxr
0	12	-	-
1	18	18-12=6	18-12=6
2	2	21-12=9	21-18=3

अथवा

Production (units)	Total Cost	Total variable cost	Marginal cost
0	12	-	-
1	18	18-12=6	18-12=6
2	2	21-12=9	21-18=3

Or

Downloaded from cclchapter.com

<table>
<tr>
<td></td>
<td>पूर्ण प्रतियोगिता बाजार उस बाजार को कहते है जिसमें किसी समरूप वस्तु के बहुत से विक्रता होते है तथा वस्तु की कीमत उधोग द्वारा निधारित होती है। इस बाजार में सभी फर्मे एक जैसी वस्तुएं बेचती है और बाजार में वस्तु की एक ही कीमत प्रचलित होती हें। इसकी विशेषताएं निम्नलिखित है :-
1. इस बाजार में फर्मे स्वतंत्र रूप् से प्रवेश कर सकती है और पुरानी फर्मे उस उधोग को छोड कर जा सकती है।
2. इस बाजार में वस्तु बाजार तथा साधन बाजार में साधनों में पूर्ण गतिशीलता पाई जाती है।</td>
<td>Perfect competition market is a market in which there are many sellers of an identical product and the price of the product is determined by the industry. In this market, all the firms sell similar goods and the same price of the goods prevails in the market. Its features are as follows:-
1. Firms can enter this market freely and old firms can leave that industry.
2. In this market, complete mobility is found in the goods market and the resources in the factor market.</td>
<td>1.5+
1.5</td>
</tr>
<tr>
<td>14</td>
<td>बाजार मांग वक्र वह वक्र है जो किसी वस्तु की विभिन्न कीमतों पर बाजार के सभी उपभोक्ताओं द्वारा मांगी गई मात्राओं के जोड को प्रकट करता है। बाजार मांग वक्र व्यक्तिगत मांग वक्र का समस्तर जोड है।
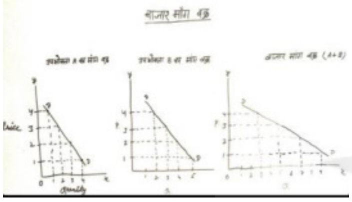</td>
<td>Market demand curve is a curve that shows the sum of the quantities demanded by all the consumers in the market at different prices of a commodity. The market demand curve is the sum total of the individual demand curves.
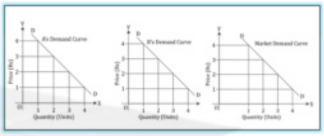</td>
<td>2+2</td>
</tr>
<tr>
<td>15</td>
<td>अल्पावधि वह अवधि है जब उत्पादन के कुछ कारक निश्चित होते हैं और कुछ परिवर्तनशील होते हैं। परिवर्तनीय कारकों का उपयोग बढ़ाकर ही उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। अल्पकाल में उत्पादन का पैमाना स्थिर रहता है।
दो आदानों, श्रम और पूंजी के मामले में अल्पकालीन उत्पादन फलन, पूंजी को स्थिर मानकर और श्रम को परिवर्तनीय उत्पादन के रूप में व्यक्त किया जा सकता है, जहां K निश्चित उत्पादन को संदर्भित करता है।
Q =F (L ,k)</td>
<td>Short run is the period when some factors of production are fixed and some are variable. Production can be increased only by increasing the use of variable factors. In the short run the scale of production remains constant.
The short run production function in case of two inputs, labour and capital, can be expressed by treating capital as fixed and labour as variable input, where K refers to the fixed input.
Q=F(L,k)</td>
<td>4</td>
</tr>
<tr>
<td>16</td>
<td>ह्रासमान प्रतिफल का नियम या ह्रासमान सीमांत उत्पादकता का नियम एक ऐसा नियम है जो बताता है कि जब इनपुट के एक कारक को बढ़ाया जाता है जबकि दूसरे कारक को स्थिर रखा जाता है, तो प्रति इकाई के संबंध में उत्पाद के उत्पादन में गिरावट होगी।
दूसरे शब्दों में, जब उत्पादन के एक कारक को वृद्धिशील रूप से बढ़ाया जाता है जबकि अन्य सभी कारकों को स्थिर रखा जाता है, तो पहले तो उत्पादकता में वृद्धि होगी, लेकिन जैसे-जैसे इनपुट को वृद्धिशील रूप से बढ़ाया जाता है, इसके परिणामस्वरूप उत्पादन में गिरावट आएगी और अंततः यह नकारात्मक हो जाएगा.
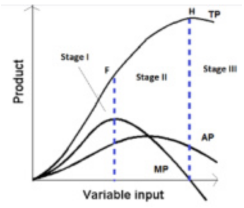

<table>
<tr><th colspan="4">Law of Diminishing Returns</th></tr>
<tr><th>Labor</th><th>Total Product</th><th>Average Product</th><th>Marginal Product</th></tr>
<tr><td>1</td><td>10</td><td>10</td><td>10</td></tr>
<tr><td>2</td><td>24</td><td>12</td><td>24</td></tr>
<tr><td>3</td><td>36</td><td>12</td><td>12</td></tr>
<tr><td>4</td><td>44</td><td>11</td><td>8</td></tr>
<tr><td>5</td><td>48</td><td>9.6</td><td>4</td></tr>
<tr><td>6</td><td>48</td><td>8</td><td>0</td></tr>
<tr><td>7</td><td>47</td><td>6.7</td><td>-1</td></tr>
</table>

अथवा</td>
<td>The law of diminishing returns or the law of diminishing marginal productivity is a law that states that when one factor of input is increased while another factor is kept constant, there will be a decline in the output per unit of output.
In other words, when a factor of production is increased incrementally while all other factors are held constant, productivity will increase at first, but as inputs are increased incrementally, it will decline. As a result production will decline and eventually turn negative.
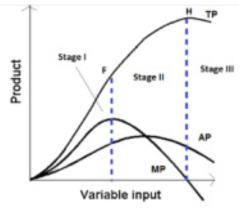

<table>
<tr><th colspan="4">Law of Diminishing Returns</th></tr>
<tr><th>Labor</th><th>Total Product</th><th>Average Product</th><th>Marginal Product</th></tr>
<tr><td>1</td><td>10</td><td>10</td><td>10</td></tr>
<tr><td>2</td><td>24</td><td>12</td><td>24</td></tr>
<tr><td>3</td><td>36</td><td>12</td><td>12</td></tr>
<tr><td>4</td><td>44</td><td>11</td><td>8</td></tr>
<tr><td>5</td><td>48</td><td>9.6</td><td>4</td></tr>
<tr><td>6</td><td>48</td><td>8</td><td>0</td></tr>
<tr><td>7</td><td>47</td><td>6.7</td><td>-1</td></tr>
</table>

OR</td>
<td>2+2
+2</td>
</tr>
</table>

Downloaded from cclchapter.com

मांग में वृद्धि :-
1. जब उसी कीमत पर पहले से अधिक मात्रा
की मांग की जाती है, तो यह मांग में वृद्धि को संदर्भित करता है।
2. मांग में वृद्धि तब होती है जब समान कीमत पर अधिक खरीदा जाता है और समान मात्रा में कमी अधिक कीमत पर खरीदी जाती है।
3. मांग में वृद्धि को मांग वक्र में दाईं ओर बदलाव से दर्शाया जाता है।

मांग में कमी:-
1. जब समान कीमत पर पहले की तुलना में कम
मात्रा की मांग की जाती है, तो यह मांग में कमी को संदर्भित करता है।
2. मांग में कमी तब होती है जब समान कीमत पर कम खरीदा जाता है या कम कीमत पर समान मात्रा खरीदी जाती है।
3. मांग में कमी को मांग वक्र में बाईं ओर बदलाव से दर्शाया जाता है।

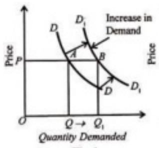

Fig. 4

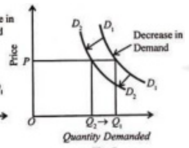

Fig. 5

Increase in demand:-
1. When more quantity is demanded than before at the same price, it refers to an increase in demand.
2. An increase in demand occurs when more is purchased at the same price and a decrease in the same quantity is purchased at a higher price.
3. An increase in demand is shown by a shift in the demand curve to the right.

decrease in demand:-
1. When less quantity is demanded
than before at the same price, it refers to a decrease in demand.
2. A decrease in demand occurs when less is purchased at the same price or the same quantity is purchased at a lower price.
3. A decrease in demand is shown by a shift in the demand curve to the left.

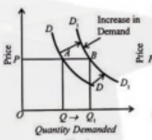

Fig. 4

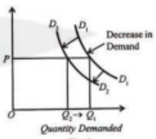

Fig. 5

3+3

17

पूर्ण प्रतियोगिता की अवस्था में संतुलन कीमत केवल एक फर्म द्वारा नही होती है बल्कि बाजार मांग तथा बाजार पूर्ति की परस्पर शक्तियों द्वारा निर्धारित होती है बाजार मांग से अभिप्राय किसी वस्तु के लिए मांग के उस कुल जोड से है जो बाजार में सभी क्रेताओं द्वारा की जाती है। बाजार पूर्ति से अभिप्राय किसी की पूर्ति के उस कुल जोड से है जो बाजार में सभी फर्मे बेचने के तैयार है। अतएव बाजार संतुलन तब प्राप्त होता है जब मांग और आपूर्ति वक्र एक दूसरे को काटते हैं । इस समय मांग और आपूर्ति बराबर है। संबंधित कीमत को संतुलन कीमत के रूप में जाता है और मात्रा को संतुलन मात्रा के रूप में जाना जाता है।

dher	iwfrZ	ekax
5	50	10
4	40	20
3	30	30
2	20	40
1	10	50

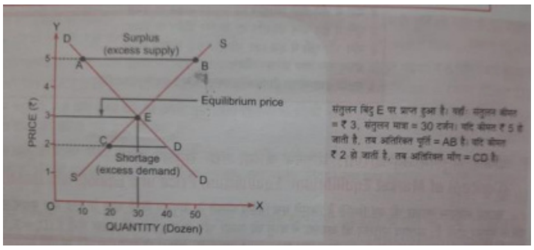

अथवा

आपूर्ति वक्र एक ग्राफ है जो कीमत और आपूर्ति के बीच संबंध दिखाता है। जैसे-जैसे कीमतें बढ़ती हैं, आपूर्ति की मात्रा भी आम तौर पर बढ़ जाती है।
किसी वस्तु की आपूर्ति की लोच के आधार पर, आपूर्ति वक्र आकार और स्थिरता में भिन्न होते हैं।

In the case of perfect competition, the equilibrium price is not determined by only one firm but is determined by the mutual forces of market demand and market supply. Market demand means the total sum of demand for a commodity which is made by all the buyers in the market. Is. Market supply means the total sum of supply of a commodity that all the firms in the market are ready to sell. Therefore, market equilibrium is achieved when the demand and supply curves intersect each other. At present demand and supply are equal. The price concerned is known as the equilibrium price and the quantity demanded is known as the equilibrium quantity.

Price	Supply	Demand
5	50	10
4	40	20
3	30	30
2	20	40
1	10	50

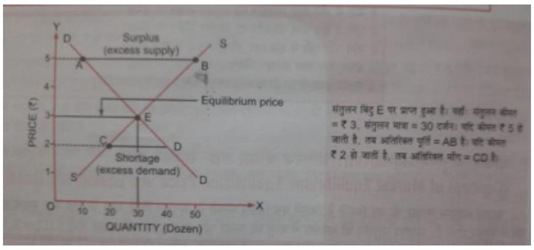

OR

Supply curve is a graph that shows the relationship between price and supply. As prices rise, the quantity supplied also generally increases.
Depending on the elasticity of supply of a good, supply curves vary in shape and steepness.

2+2+2

3+3

Downloaded from cclchapter.com

	आपूर्ति वक्र दो प्रकार के होते हैं: व्यक्तिगत और बाज़ार। एक व्यक्तिगत आपूर्ति वक्र दर्शाता है कि किसी व्यवसाय की आपूर्ति की मात्रा कीमतें बढ़ने के साथ कैसे बदलती है । बाज़ार आपूर्ति वक्र दी गई कीमतों के लिए समग्र बाज़ार की आपूर्ति को दर्शाता है; यह सभी विक्रेताओं के आपूर्ति वक्रों का योग है। **पूर्ति के निर्धारक तत्व :-** 1. कीमत। 2. बाज़ार में विक्रेताओं की संख्या । 3. संसाधनों की कीमत । 4. कर दरें और सब्सिडी। 5. प्रौद्योगिकी और स्वचालन में सुधार । 6. आपूर्तिकर्ताओं की उम्मीदें । 7. संबंधित उत्पादों की कीमत ।	There are two types of supply curves: individual and market. An individual supply curve shows how the quantity supplied by a business changes as prices increase. The market supply curve shows the overall market supply for given prices; It is the sum of the supply curves of all sellers. **Determinants of supply :-** 1. price. 2. Number of sellers in the market. 3. Price of resources. 4. Tax rates and subsidies. 5. Improvements in technology and automation. 6. Expectations of suppliers. 7. Price of related products.	
18	d) उपरोक्त सभी	d) All of these	1
19	b) कपडे	b) clothes	1
20	b) प्रवाह	b) Flow	1
21	c) साख का संकुचन एवं विस्तार	c) Contraction and Extension of credit	1
22	c) जे. बी. से	c) J.B. Say.	1
23	शुन्य	zero	1
24	पूंजी	capital	1
25	अनंत	Infinity	1
26	a) अभिकथन(A) और कारण (R) दोनो सही है और कारण (R) अभिकथन (A) की सही व्याख्या है।	a) Both Assertion (A) and Reason (R) are correct and Reason (R) is the correct explanation of Assertion (A)	1
27	a) अभिकथन(A) और कारण (R) दोनो सही है और कारण (R) अभिकथन (A) की सही व्याख्या है।	a) Both Assertion (A) and Reason (R) are correct and Reason (R) is the correct explanation of Assertion (A)	1
28	राष्ट्रीय आय एक वर्ष की अवधि के दौरान किसी देश द्वारा उत्पादित सभी वस्तुओं और सेवाओं का मौद्रिक मूल्य है। 1. स्थानांतरण आय को शामिल नहीं किया जाना चाहिए। 2. अवैध गतिविधियों से होने वाली आय को शामिल नहीं किया जाना चाहिए। 3. वित्तीय लेनदेन (शेयर, डिबेंचर और बांड आदि) की बिक्री और खरीद से होने वाली आय को शामिल नहीं किया जाना चाहिए। 4. सेकेंड हैंड सामान की बिक्री से होने वाली आय को शामिल नहीं किया जाएगा क्योंकि इससे दोहरी गिनती की समस्या होती है। अथवा निवेश गुणक नई परियोजनाओं के रूप में सरकार द्वारा किए गए निवेश में वृद्धि के परिणामस्वरूप अर्थव्यवस्था की कुल आय में वृद्धि को संदर्भित करता है। निवेश गुणक का आकार किसी अर्थव्यवस्था में खर्च (जिसे उपभोग करने की सीमांत प्रवृत्ति के रूप में जाना जाता है) या बचत (बचत करने की सीमांत प्रवृत्ति के रूप में जाना जाता है) के क्षेत्रों में परिवारों के निर्णयों द्वारा निर्धारित किया जाता है। गुणक को निम्नलिखित सूत्र द्वारा दर्शाया जा सकता है। $K = \Delta Y / \Delta I$	National income is the monetary value of all goods and services produced by a country during a period of one year. 1. Transfer income should not be included. 2. Income from illegal activities should not be included. 3. Income from financial transactions (sale and purchase of shares, debentures and bonds etc.) should not be included. 4. Income from sale of second hand goods will not be included as it causes problem of double counting. OR Investment multiplier refers to the increase in the total income of the economy as a result of increase in investment made by the government in the form of new projects. The size of the investment multiplier is determined by the decisions of households in the areas of spending (known as the marginal propensity to consume) or saving (known as the marginal propensity to save) in an economy. The multiplier can be represented by the following formula. $K = \Delta Y / \Delta I$	3 3

Downloaded from cclchapter.com

29	मौद्रिक नीति या साख नियत्रंण से अभिप्राय देश के केन्द्रीय बैंक द्वारा निश्चित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए साख के संकुचन तथा साख के विस्तार का नियंत्रण करना है। एक देश के केंन्द्रीय बैंक की मौद्रिक नीति के मुख्य उपकरण अथवा उपाय इस प्रकार हैं :- आरबीआई की मौद्रिक नीति (साख नीति) में नीचे दिए गए चार्ट में दिए गए दो उपकरण शामिल हैं: **मौद्रिक उपाय** 1. मात्रात्मक माप :- बैंक रेट, नकद निधि अनुपात, वैधानिक तरलता अनुपात 2. गुणात्मक माप :- सीमांत आवश्यकताएँ, चयनात्मक साख नियंत्रण, नैतिक समाधान	Monetary policy or credit control means controlling the contraction of credit and expansion of credit by the Central Bank of the country to achieve certain objectives. The main instruments or measures of monetary policy of the central bank of a country are as follows:- The monetary policy (credit policy) of RBI is given below The two instruments given in the chart are: **monetary measures** 1. Quantitative Measures:- Bank Rate, Cash Fund Ratio, Statutory Liquidity Ratio 2. Qualitative Measurement:- Marginal Needs, Selective Credit Control, Ethical Solutions.	1.5+ 1.5
30	करेतर राजस्व प्राप्तियां सरकार की वे प्राप्तियां है जो करों को छोड कर अन्य स्त्रोतों जैसे :- ब्याज, लाभाशं, आदि से प्राप्त होती है। कुछ करेतर राजस्व प्राप्तियां निम्नलिखित है : 1. फीस लाइसेंस तथा परमिट 2. एसचीट 3. विशेष आंकन 4. जुर्माना एवं जब्ती 5. सरकारी उद्यमों से आय 6. उपहार तथा अनुदान अथवा केन्द्रीय बैंक देश का सर्वोच्च बैंक है जो देश की संपूर्ण बैकिंग प्रणाली का नियंत्रित करता है। इस बैंक का कार्य अल्पविकसित देशों के संदर्भ में आर्थिक विकास के कार्य को संभव बनाना होता है। केन्द्रीय बैंक द्वारा किए जाने वाले कार्य इस प्रकार है : 1. नोट जारी करना 2. सरकार का बैंक 3. बैंको का बैंक 4. बैंको का निरिक्षण	Non-tax revenue receipts are those receipts of the government other than taxes. It is received from other sources like interest, dividend, etc. Some non-tax revenue receipts are as follows: 1. Fees License and Permit 2. escheat 3. Special Assessment 4. Fine and confiscation 5. Income from government enterprises 6. Gifts and grants Or The Central Bank is the supreme bank of the country which controls the entire banking system of the country. The work of this bank is to make the work of economic development possible in the context of underdeveloped countries. The functions performed by the Central Bank are follows: 1. Issue of notes 2. Government Bank 3. Bank of Banks 4. Inspection of banks	2+2 2+2
31	पूंजीवादी अर्थव्यवस्था से अभिप्राय उस अर्थव्यवस्था से है जिसमें आर्थिक क्रियाओं को बाजार शाक्तियों की स्वतंत्र अंतक्रिया पर छोड दिया जाता है। उत्पादक उन वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन करने में स्वतंत्र है जिनकी मांग अधिक है ताकि वे अपने लाभ अधिकतम कर सके अर्थात इस पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में उत्पादन लाभ कमाने के उद्देश्य से किया जाता है। इस अर्थव्यवस्था के मुख्य लक्षण इस प्रकार है :- 1. निजी संपति की स्वतंत्रता होती है। 2. कीमत सयंत्र 3. उद्यम की स्वतंत्रता 4. लाभ प्रेरणा	Capitalist economy means that economy in which economic activities are left to the independent interaction of market forces. Producers are free to produce those goods and services which are in high demand so that they can maximize their profits, that is, in this capitalist economy production is done with the aim of earning profit. The main characteristics of this economy are as follows:- 1. There is freedom of private property. 2. price plant 3. Freedom of enterprise 4. Profit Motivation	2+2
32	किसी देश की घरेलु सीमा में एक लेखा वर्ष में सभी उत्पादकों द्वारा जितनी भी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन होता है जिसमें मुल्यह्रास भी शामिल होता है।उनकी बाजार कीमत के जोड को बाजार कीमत पर सकल घरेलु उत्पाद कहा जाता	The total number of final goods and services produced by all producers within a country's domestic territory in an accounting year, including depreciation, is called gross domestic product at market price.	2+2

Downloaded from cclchapter.com

है।
बाजार कीमत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP_{MP}) =
बाजार कीमत पर सकल घरेलु उत्पाद(GDP_{MP}) + विदेशों से प्राप्त निवल कारक आय

Gross National Product (GNP_{MP}) at market price =
Gross domestic product at market prices (GDP_{MP}) + net factor income from abroad

33 (3+3)

व्यष्टि अर्थशास्त्र तथा समष्टि अर्थशास्त्र में क्या अन्तर है।

अन्तर के बिन्दु	व्यष्टि अर्थशास्त्र	समष्टि अर्थशास्त्र
अर्थ	व्यक्तिगत ईकाइयों के आर्थिक व्यवहार का अध्ययन किया जाता है।	सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था की समग्र इकाइयों का अध्ययन किया जाता है।
अध्ययन का क्षेत्र	कीमत निर्धारण, उपभोक्ता संतुलन, उत्पाद संतुलन	राष्ट्रीय आय तथा रोजगार का निर्धारण
उपकरण	मांग एवं पूर्ति	समग्र मांग एवं समग्र पूर्ति
अध्ययन की विधियां	आंशिक संतुलन विश्लेषण	सामान्य संतुलन विश्लेषण
उदाहरण	व्यक्तिगत मांग, पूर्ति, कीमत, फर्म इत्यादि	समग्र मांग, कुल आय

उपर्युक्त दी गई व्याख्या सही है।

अथवा

नकद निधि अनुपात:- इसका अर्थ बैंक की कुल जमाओ का वह न्युनतम अनुपात है जो उसे केन्द्रीय बैंक के पास जमा रखना पडता है। व्यापारिक बैंको को कानूनी तौर पर अपनी जमाओं का एक निश्चित प्रतिशत केंन्द्रीय बैंक के पास नकद निधि के रूप में रखना पडता है। उदाहरण के लिए, यदि न्युनतम निधि अनुपात 10 प्रतिशत है और किसी बैंक की कुल जमाएं 100 करोड है तो इस बैंक का 10 करोड केन्द्रीय बैंक के पास रखने होगे।

वैधानिक तरलता अनुपात:- प्रत्येक बैंक को अपनी परिसंपतियों के एक निश्चित प्रतिशत को अपने पास नकद रूप् में या अन्य तरल परिसंपतियों के रूप में कानूनी तौर पर रखना पडता है जिसे वैधानिक तरलता अनुपात कहते है।
यदि वैधानिक तरलता अनुपात 20 % है, तो बैंक 2 लाख रुपये तरल संपत्ति में रखेगा और शेष 8 लाख रुपये ही ऋण दे सकेगा।

Differences	Microeconomics	Macroeconomics
Definition	Microeconomics is the study of economic actions of individuals and small groups of individuals.	Macroeconomics studies the economy as a whole and not a single unit but combination of all.
Concern with	Particular households, firms and industries	National income, general price levels, national output, unemployment and poverty
Objective	On demand side is to maximize utility whereas on the supply side is to minimize profits at minimum cost	Full employment, price stability, economic growth and favourable balance of payments.
Basis	Price mechanism which operates with the help of demand and supply forces	National income, output and employment which are determined by aggregate demand and aggregate supply
Assumptions	Rational behaviour of individuals	Aggregate volume of output of an economy, the extent to which its resources are employed
Limitations	Existence of full employment	Involvement of 'Fallacy of Composition' which doesn't prove true

The explanation given above is correct.

Or

(3+3)

Cash Reserve Ratio:- It means the minimum proportion of the total deposits of the bank which it has to keep with the Central Bank. Commercial banks are legally required to keep a certain percentage of their deposits with the central bank in the form of cash funds. For example, if the minimum funding ratio is 10 percent and the total deposits of a bank are Rs 100 crore, then Rs 10 crore of this bank will have to be kept with the central bank.

Statutory Liquidity Ratio:- Every bank has to legally keep a certain percentage of its assets with itself in the form of cash or other liquid assets, which is called statutory liquidity ratio.
If the statutory liquidity ratio is 20%, the bank will
Will keep it in liquid assets and will be able to give loan only the remaining Rs 8 lakh.

34 (3+3)

a) बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद (GDP_{MP}) =
किराया + लाभ + ब्याज + रॉयल्टी + मजदूरी वेतन + सामाजिक सुरक्षा के मालिकों का योगदान + निवल अप्रत्यक्ष कर + अचल पूँजी का उपभोग।

बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद (GDP_{MP}) = 10 करोड़ + 25 करोड़ + 20 करोड़ + 5 करोड़ + 170 करोड़ + 30 करोड़ +38 करोड़ + 34 करोड़ = 332 करोड़

b) कारक लागत पर निवल राष्ट्रीय उत्पाद (NNP_{FC}) =
बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद + विदेशों से प्राप्त निवल कारक आय - निवल अप्रत्यक्ष कर - अचल पूँजी का उपभोग

कारक लागत पर निवल राष्ट्रीय उत्पाद (NNP_{FC}) = 332 करोड़ - 3 करोड़ - 38 करोड़ - 34 करोड़ = 257 करोड़।

अथवा

a) Gross Domestic Product at Market Price (GDP_{MP}) =
Rent + Profit + Interest + Royalties + Wages Salaries + Owners Contribution to Social Security + Net Indirect Taxes + Consumption of Fixed Capital.

Gross Domestic Product at market price (GDP_{MP}) =
10 crore + 25 Crore + 20 Crore + 5 Crore + 170 Crore + 30 Crore + 38 crore + 34 crore = 332 crore

b) Net National Product at Factor Cost (NNP_{FC}) =
Gross Domestic Product at Market Price + Net Factor Income from Foreign - Net Indirect Taxes - Consumption of Fixed Capital

Net National Product at Factor Cost (NNP_{FC}) = 332 crore - 3 Crore – 38 Crore – 34 Crore = 257 Crore.

OR

Downloaded from cclchapter.com

	एक वस्तु के मूल्य की गणना जब एक बार से अधिक होती है तो उसे दोहरी गणना कहते है। उत्पाद विधि (मुल्य वृद्धि विधि) वह विधि है जो एक लेखा वर्ष में देश की घरेलु सीमा के अंतर्गत प्रत्येक उत्पादक उद्यम के उत्पादन में योगदान की गणना करके राष्ट्रीय आय को मापती है। इस विधि में सबसे पहले उन उद्यमों की पहचान की जाती है जो उत्पादन करते है, और उनका वर्गीकरण तीन श्रेणियों में किया जाता है। उसके बाद दोहरी गणना को ध्यान में रखते हुए, मुल्य वृद्धि की गणना की जाती है। उत्पाद विधि (मुल्य वृद्धि विधि) से संबंधित सावधानियां:- 1 . पुरानी वस्तुओं के क्रय विक्रय को मुल्य वृद्धि में शामिल नही किया जाना चाहिए। 2. पुरानी वस्तुओं के व्यापारियों की दलाली को मुल्य वृद्धि में शामिल नही किया जाना चाहिए। 3. मध्यवर्ती वस्तुओं के मूल्य को मुल्य वृद्धि में शामिल नही किया जाना चाहिए। 4. जिन मकानों में मालिक खुद रह रहे है उनका भी आरोपित किराया शामिल किया जाता है।	When the price of an item is calculated more than once, it is called double calculation. Product method (value added method) is a method that measures national income by calculating the contribution to the output of each productive enterprise within the domestic border of the country in an accounting year. In this method, first of all those enterprises which produce are identified, and they are classified into three categories. The price rise is then calculated keeping double counting in mind. Precautions related to product method (value added method):- 1. Buying and selling of old items should not be included in the price increase. 2. Brokerage of old goods traders should not be included in the price increase. 3. The value of intermediate goods should not be included in price rise. 4. The imputed rent of the houses in which the owners themselves are living is also included.	3+3

Downloaded from cclchapter.com